हिन्दुस्तानी एकेडेमी पुस्तकालय
इलाहाबाद

वर्ग संख्या ८९१ ८
पुस्तक संख्या अवि/बु
क्रम संख्या १८८६५

कुछ नए बन्धों पर पुनः

हस्सास दिल, जज्बातों का खजाना, मसूमियत का जमघट, मायूसियों का मेला, फलसिफाना ख्यालात का मजमुआ, जिहानत की इन्तिहा, दूर अन्देशी, प्यासे मोहब्बत का बेकिनार समुन्दर,, इन सबका यकजा करके जो बने बस वही ‘अमिताभ’’ है ।

– एक हसीन शख्सियत द्वारा
लिखे गए एक यादगार खत
के कुछ अंश

छूटे तट बन्धों पर पुनः

(काव्य संग्रह)

अविनाश

रामानन्द प्रेस, काकड़िया अहमदाबाद

प्रकाशक
रामानन्द प्रेस अहमदाबाद (गुजरात

अविनाश

प्रथम संस्करण
भाद्रपद सुद १, तीस अगस्त इक्यासी

मूल्य १०-००

मुद्रक श्री मारुति प्रिन्टिंग प्रेस, अहमदाबाद (गुजरात)

उन दस्तकों को
जो नज़र अन्दाज़
कर दिये जाते है

ितिज के हाशिए पर
ुछ छोटे हमने
िराशा के हस्तलिखित परिपत्र
नो मेरे आहत संकल्प
ुम अवश्य पढ़ना
रे वे विकल्प

निवेदन

किसी काव्य-संग्रह को सामान्यतः भूमिका की अपेक्षा नहीं होनी चाहिए। विशेष कर स्वयं कवि द्वारा लिखी भूमिका में अहमन्यता दावे और धृष्टता अथवा 'सेल्फ डिफेन्स' का लहजा उतर आना असम्भव भी नहीं है। अपने बारे में तीसरे व्यक्ति की निःसंगता और निरपेक्षता धारण करके कह लेना सम्भवतः अत्यधिक दुरूह एवं चुनौती-पूर्ण भी हो जाता है। फिर भी पुस्तक से सम्बन्धित सामान्य पीठिका पाठक को रचना के सहानुभूतिपूर्ण ढंग से समझने में सहायक भी होती है।

काव्य रचना की प्रक्रिया में अनुभूति अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण एक त्रिकोण है। रचयिता की अनुभूति का अभिव्यक्ति पा लेना रचयिता की अपनी सिद्धि हो सकती है पर वाचक या पाठक को अपनी उसी मनोभूमि के स्तर तक सहज ही ले आना रचना की सिद्धि है।

जिस प्रकार श्वासोच्छ्वास की सहज क्रिया जीवन को जीवित रखती है उसी प्रकार कवि के लिए काव्य-प्रणयन आत्मरंजन से अधिक एक अनिवार्यता बन जाती है, व्यक्तित्व की मुक्ति का माध्यम बन जाती है। अभिव्यक्ति की पीड़ा प्रसव पीड़ा बन जाती है और अपनी संवेदनाओं में रचनाकार संपूर्ण परिवेश से एकाकार हो जाता है। काव्य का विषय एवं संदर्भ सामाजिक विडम्बनाएँ भी हो सकती हैं चिरन्तन मूल्यों की पुनर्स्थापना का आग्रह भी स्थापित एवं प्रतिष्ठित मानव मूल्यों का व्यवस्थागत विद्रोह भी। विषय की चारदीवारी, स्थितियाँ घटनाएँ, व्यक्ति एवं अनुभव ही हो सकते हैं। सभी रचनाकार के पहले भी साहित्य लिखा गया था उसके समकालीन भी लिखा जा रहा होगा और उसके बाद भी बहुत कुछ लिखा जाएगा। अज्ञेयजी के शब्दों में "संसार में कोई महान् कवि भी ऐसा नहीं हुआ जिसने कहीं से कुछ न लिया हो। आखिर शिक्षा मात्र दूसरों से कुछ ग्रहण करने की ही प्रक्रिया है। परम्परा भी उससे सम्बन्ध का नाम है जो पहले से मौजूद है, जो (दिया हुआ) है। और 'कविता में से कविता निकलती है' इस का अर्थ भी यही है कि प्रभावों का एक अपरिहार्य समूह सर्वदा मौजूद रहता है।" इतना होने पर भी हर रचनाकार की अपनी मौलिकता अपना वैशिष्ट्य तो होता ही है जो अनुकरण अनुसरण से परे है।

कविता एन्द्रिय, आत्म परक एवं निजी हो जाती है। मन और विषम के बीच मानसिक तनाव तीव्रतम् जिजीविषा से पीड़ित मन, इ उ मरु ... से भोगते अह से जन्मे अनगिनत प्रश्नचिह्न कांच के ... निशीथन ... है। इस रचना की यही विशेषता है कि अपने अन्तर के बिन्दु पर उसकी ... से जुड़ जाती है। इस स्तर पर रचनाकार के आनन्द अवसाद ... सहानु रोष आक्रोश, अन्तः सघर्ष केवल उसके ही नहीं रहते ... के इस 'निजत्व' का दायरा केवल 'भोगे हुए यथार्थ' के ... तक सीमित नहीं रहता।

पचास कविताओं का यह काव्य संग्रह मेरी ... पुस्तक तथा पाँचवा काव्य है। पता नहीं कि पाँचों काव्य संग्रहों के रचनाक्रम से पढ़ने पर मेरे ... व्यक्तित्व अभिव्यक्ति का कैसा चित्र प्रस्तुत होता है पर मैंने सदा से ही अपनी अनुभूति वेदना के स्तर पर मुक्त रखकर ... यथार्थ जीवन ... से ... का प्रयास है। मेरी रचनाओं में मिठास भी है, कड़वाहट भी ... सहानुभूति भी है तल्खी भी पराजय पलायन खिन्नता अविश्वास ... भी है और चुनौती कर्मठता दृढ़ता और आत्मनिर्णय भी है। मेरे ... तथा शक्ति पर इमानदारी का लेबल लगाना मेरे पाठकों का काम ... यदि ... को सामाजिक सृजनात्मक दायित्व बोध की तुला पर ... उपलब्धियों का मूल्यांकन करना मेरे समीक्षकों का काम है। मुझे अपनी ... का कोई प्रमाण पत्र भी नहीं चाहिए। मेरे लिए तो इतना ही पर्याप्त है कि ... महसूसा मेरे सवेग क्षणों के आवेग में मात्र शब्दों के माध्यम से सहृदय तक पहुँच सका। अस्तु !

' कुछ तो निशाँ हुए होंगे
गुजरी बहारें कुछ तो कहती
इस आशियाँ की कहानी
कोई सुनेगा लहरों की बात
तट से कभी तो जबानी "

—अविनाश

भाद्रपद सुद १
तीस अगस्त इक्यासी

'शलभ' कामायनी मार्ग
अहमदाबाद (गुजरात)

अनुक्रम

१	यथार्थ जोग	१
२	सम्मित मूल्यप्रेत	४
३	प्रश्नचिन्ह परिवेशों के	६
४	र रुक	७
५	आस्था के अक्षयवट	९
६	परिश्रय	१०
७	परिणति	१२
८	भीड़ से अलग अलग	१४
९	अनाहूत प्रवंचना	१६
१०	दिया जलेगा रात भर	१७
११	उम्र की बस्ती	१८
१२	अजगर सी बढ़ी साँसें	२०
१३	सिकता प्राणों के	२२
१४	प्रतिबद्धता	२४
१५	रोशनी ने अन्धकार ही चुना	२५
१६	मन आंगन	२७
१७	श्याम रंग	२९
१८	सपना जो साथ नहीं	३१
१९	झरता भोर	३२
२०	खाली सेजवा	३३
२१	रस्ता है मेरा अजाना	३४
२२	बहता रहा मैं	३७
२३	पारदर्शी	३९
२४	खो रहा अतीत	४०
२५	मौत बार बार	४१
२६	याद तुम्हारी	४२
२७	नयन की कोर	४४

तुम्हारी गन्ध	४६
सुनो प्रतीक्षा	४८
उम्र की फसल कटी	०
सार्थक सदिग्धता	०१
आभ्यंतर ग्रंथि	
प्रसंग च्युत	२
मोह चित्र	४
ह्रास औ पराजय	५५
अधरे पुकारे	५
धूप से क्या गिला	५८
मनुहार	६०
फागुन के दिन	६१
दिशा बिना	६४
निःशेष	६३
सिर्फ श्राप	६
चढ़ती लालसा	६६
हाँसिये	६८
शुभ्रवसना	६९
सार्थक	७१
दस्तकों के दुआरे	७२
इस्तहारी आस्था	७३
आहटें अज्ञात	७४
मुस्कराहट फर्ज	७५

छूटे तटबन्धों पर पुनः

की रचनाएँ

की सौन्दर्य भावना (समीक्षा-१९७१)
ते तथा अन्य कहानियाँ (कहानी संग्रह -१९७९)
निशान और टूटे हुए ऐवरेस्ट (काव्यसंग्रह-१९७१)
शाओं का त्रिकोण (काव्यसंग्रह १९७४)
र के सूरजमुखी (काव्यसंग्रह १९७७)
धूप (काव्यसंग्रह १९८०)
ों पर पुल (काव्यसंग्रह १९८१)

यथार्थ-बोध

टूटते प्रभंजनों के मोह भी
आँधियाँ चलीं मगर ठहर गयीं
मृत्यु से ही ज़िन्दगी अमर बनी
आग तो जली, भले ही बुझ गई

रोग है अगर निदान भी तो है
है समाज गर, विधान भी तो है
फैसले यहाँ अदालतें यहाँ
आँसुओं के साथ न्यामतें यहाँ

दो अलग अलग नियति है इसलिए
बो रहे हैं कुछ औ कुछ हैं काटते
सिर्फ अकेले सुखों को भोगकर
दुख हम सभी से क्यों हैं बाँटते

आज स्नेह प्रश्न-चिन्ह बन रहा
स्वार्थ के कगार भीड़ बढ़ रही
शब्द शब्द खुद ही कोश बन रहा
छन्द छन्द आज रागिनी नई

कौन मन्दिरों के द्वार जाए अब
भक्त खुद ही इष्ट बन गये जहाँ
कौन मंजिलों की अब करे फिकर
रास्ते स्वयं ही मंजिलें जहाँ

धार धार हो रहेगी जल नहीं
रात रात ही रही सुबह नहीं
शब्द अर्थ के बिना तो कुछ नहीं
छाँव के बिना ये धूप कुछ नहीं

याद जो रहे वही अतीत है
प्यास जिससे बुझ सके वो नीर है
पा सके वो क्या जो दे सका नहीं
छाछ जिन्दगी नहीं खमीर है

पोस्टरों को आदमी समझ के हम
पोस्टरों की जिन्दगी ही जी रहे
हम अह के अक्षतों के जोर से
पत्थरों को पूजते ही आ रहे

क्यों विराम पूर्ण हो लगा हुआ
वाक्य के बिना ही, ऐसी जिन्दगी
क्यों ग्रहण गगन में सबको दिख रहा
चन्द्र के बिना ही, ऐसी बन्दगी

सूखते गये समय के ताल भी
क्यों उदास शाम फिर सहम गई
दो सुरों के साथ लय की धुन बनी
नींद थी लगी, वो क्यों उचट गई

संक्रमित मन्य-प्रेत

यहाँ अपवाद पूँजे जा रहे
है, नियम है वर्जित
यहाँ झूठी कहानी सच से
ही रही है चर्चित

यहाँ अपराध के हर देवता
का रूप है सुन्दर
यहाँ विश्वास की जलती
चिता पर हैं बने मन्दिर

यहाँ हर एक सुख से भागता
फिरता है अरसे से
यहाँ हर प्यार धोखा है
यहाँ सम्बन्ध नफरत के

यहाँ हर चीज बिकती है
यहाँ हर जाम है खाली
यहाँ हर सेज विधवा है
यहाँ हर बाग बिन माली

यहाँ हर मांग सूनी है
यहाँ हर कोख है खाली
यहाँ भगवान झूठे हैं
यहाँ बेदर्द हर प्याली

चलो चलकर बसा लें
आज ऐसे एक फिर दुनिया
जहाँ हर एक का दुख
दूसरों के साथ पलता हो

जहाँ सूर्यास्त की किरणों
में नीड़ो का बसेरा हो
जहाँ पलकों की छाया में
किसी का नेह सम्बल हो

अगर सम्भव नहीं है इस
धरा पर, एक यह दुनियाँ
निरर्थक है बहुत निस्सार
है अब और यह जीना

प्रश्नचिन्ह–परिवेशो के

झुलस गये गंधो के चन्दन–वन
कसमो ने अधरो को सी डाला
बिखर गये अनुबन्धो के हर क्षन
प्रतिबन्धो ने आगम बुन डाला

अहसासो की खुशबू चुकी हुई
बीता कल अन्तर्मन भेद रहा
सुधियो की पाती मिली नहीं
बंजारा मन कब से भटक रहा

अन्धे सकल्पों की उलझन ने
बींध दिया तार तार प्राणों के
दाहक सलीबों ने बुन डाले
प्रश्न-चिह्न फिर से परिवेशो के

कोलाहल फिर अधी गलियो में
मिलकर सन्नाटों से सहम गया
सारे निर्वासित मन्सूबों को
झूठे इतिहासो ने निगल लिया

हार गये आस्था के पैगम्बर
सिकता ने सागर को सोख लिया
हर निश्चय सन्देहो के विषधर
तट ने हर लहरो को मौत दिया

छूटे तट–बन्धों पर पुन

बन्धक

ये सूनी सूनी निगाहें
जाने किसे ढूँढती हैं
बेहद उदासी की शामें
जाने किसे चाहती हैं

शायद इसी रास्ते पर
मरु ने डसा था नदी को
शायद यहीं से गुजर कर
सपनों ने भेंटा कफन को

पदचिन्ह यह कह रहे हैं
कोई तो निश्चित था आया
गुमसुम खिजां कह रही है
तूफान बेशक था आया

हम प्यार जिसको समझते
शायद वह धोखा नजर का
अपना हैं जिसको समझते
वरदान है सिर्फ भ्रम का

हर एक आधा अधूरा
ढूँढा किये हैं स्वयं को
बस आत्म-छल के सहारे
ऊँचा उठाये अहं को

दम्भो के दर्पन जिन्हे हम
जन्मो से पाले हुए है
क्या फैसला वे करेंगे
जो खुद हमारे लिए है

धन्धक जिसे रख चुके है
हम उसको कहते है अपना
हम जिससे रखते है पर्दा
हमराज़ कहते है अपना

गाँठो के धागे पिरोये
कसमो की बाहो को थामे
हम बाँटते जा रहे है
खट्टे कसैले फसाने

कितनी है गहरी उदासी
[illegible] गन्ध लगती है बासी
साँसो की यह मीन रहती
जल मे, मगर फिर भी प्यासी

आस्था के अक्षय-वट

मै गति से आगे एक चिरन्तन ज्वाला
हर रात मुट्ठी से ले आती उजियाला

जिस तरफ पड़े मेरे पग मंजिल वहीं बनी
मेरे संग संग तूफान चले आँधियाँ चलीं
मै खुद अपने अम्बर-अवनी का निर्माता
है नियति खड़ी मेरे द्वारे मैं हूँ दाता

मै अन्तहीन सलिल की ऐसी धारा
जिसने तट के शैवालो को ललकारा

तिनके डूबे मै तो लग गया किनारे पर
मै जिधर मुड़ा संकेत दिशाओ को देकर
मेरी अभिलाषा हहराती बढ़ती नदिया
जो मेरे आड़े आया उसको ध्वस्त किया

मै सतरंगी सपनो की ऐसी काया
सबने जिसकी स्तुति मे गाना गाया

मैने सत्कारा आगत को पूजा कल को
मैने स्वीकारा दुख-दुविधा हर विपदा को
आँसू मेरे आगन मे आकर बरस गये
मेरी साँसो ने श्रापो से अभिषेक किये

मेरा जीवन है एक छलकता प्याला
हर प्यास मुझे पहनाती है वरमाला

परिदृश्य

अगले सफर पर
फिर से निकलने
हमको कहीं तो
रुकना पड़ेगा

सांसों का उपवन
फिर से महक ले
पतझर तो हमको
सहना पड़ेगा

चुकने दो प्याली
बढ़ने दो तृष्णा
क्या हर्ज है जो
टूटी है वीणा

आएगा साकी
खाली जो प्याली
उपवन सजाने
आएगा माली

मूल्यों की दुनियाँ में
फिर से सँवरने
हमको किसी हाट
बिकना पड़ेगा

सावन की झरमर
फिर से बरस ले
धरती को यह ताप
सहना पड़ेगा

हम जीतकर हार को
भेंट लें क्यों
हम हार कर
जीत को प्यार देंगे

हम बोल कर क्यों
बढ़ाएँ व्यथा को
हम मौन को
गीत का नाम देंगे

परिणति

कितनी बची है
कितनी है बीती
कितनी सजी है
कितनी है रीती

मन की ये बातें
साँसों की घातें
बोलें बिना कुछ
तू सब सहे जा

कोई नहीं है
हमराज़, साथी
ओठों पे हाँसी
दिल में उदासी

बदरा बदाग है
धरती की ज्वाला
काँटे पिरोये है
धड़कन की माला

अगना अटारी
चुप्पी की मारी
माला बिना है
बचपन की प्याली

कितनी सही है
कितनी है झूठी
मीठी है कितनी
कितनी है तीखी

कसमो की बाते
चाँदी की राते
बिसरा के ये सब
बस अब जिए जा

भीड़ से अलग अलग

कोई मुझको रोक ले
इसलिए चला किया
कोई थोड़ा प्यार दे
इसलिए मचल लिया

वो लिए गुलाब फिर
क्यों बबूल उग रहे
पाँव में मेरे तो अब
सिर्फ दंश चुभ रहे

मै बहार के लिए
था कभी न आज हूँ
हर घड़ी भटक रहा
मै वही बयार हूँ

साँझ फिर सँवर सके
रात के गले लगे
एक अमावस लिए
नयन छलकते रहे

सिर्फ साथ के लिए
मै यहाँ रुका रहा
सिर्फ नेह के लिए
आज तक भटक रहा

भीड़ से अलग अलग
साझ से सुबह तलक
जाने कैसे आज तक
जी रहा है ये फलक

कोई मुझको थाम ले
इसलिए गिरा किया
कोई तो मना करे
बार बार पी रहा

अनावृत प्रवचना

इस कदर बढ़ी चुभन
इस कदर बढ़ी थकन
एक उदासी भरी
साँझ का है आगमन

क्यों है कह रहा ये मन
कोई साथ हो यहाँ
मौन टूट ले जरा
कोई बात हो यहाँ

दर्द सुनाता रहा
एक भयावह सपन
फिर कहीं सुलग उठी
साँस में बसी जलन

कब तलक बहा करूँ
कटकों की धार में
कब तलक सहा करूँ
वेग औ प्रवाह में

कोई तो पुकार ले
कोई तो सँवार ले
रास्ते में रोक कर
हाल जरा पूँछ ले

आज मौन है पवन
आज धीर फिर गगन
बन गई है अनकही
एक कहानी अगन

दिया जलेगा रातभर

न साँझ वह न वह सहर
न अब रही हो वह नजर
किसे कहे हम अपना घर
किसे बनाये हम सफर

छिड़े हुए वसूल हैं
मुड़े हुए हैं कारवाँ
बुझी हुई चिता है ये
थके हुए हैं आसमाँ

सचाई सिर्फ एक है
हरेक सुख सिसक रहे
कसम तले सदैव से
फरेब ही पनप रहे

नसीब है न ठौर वो
जहा सुकून मिल सके
चलेगा अब न दौर वो
कि वक्त फिर ठहर सके

सफर रुकेगा अब कहाँ
न कोई कह सका यहाँ
चले जो कल थे कारवाँ
रुके हुए है सब वहाँ

बहार ला रही कहर
सहे न आऐं मुन्तजर
है जिन्दगी बनी जहर
दिया जलेगा रातभर

उम्र की गली

चाँदनी घुली घुली
द्वार खटखटा रही
बिन तुम्हारे आज मैं
द्वार कैसे खोल दूँ

एक गंध प्राण की
थी सदैव से यहाँ
तुम वहीं सुगन्ध थीं
तुम वहीं बहार थीं

एक रंग स्नेह का
जो सदा बना रहा
तूलिका तुम्हीं तो थीं
मैं तो चित्रकार था

उम्र की गली में फिर
हाट स्वप्न की लगी
बिन उमंग किस तरह
स्वप्न को सँवार लूँ

बेकसी की मजार पर
फूल खिल रहे हैं क्या
बाग ही उजड़ गया
तब बहार आये क्यों

राज़ का वजूद तो
राज़ ही रहा सदा
सुन सके अगर न दिल
शोर से क्या फायदा

सर्द रात फिर यहाँ
लौट लौट आ रही
जो नसीब में लिखा
कैसे उसे टाल दूँ

बहुत देर हो चुकी
आओ लौट हम चलें
डबडबाये हो नयन
फिर भी अलविदा कहें

कहकहों का ये नगर
कितना उदासीन है
सुख यहाँ छले हुए
प्राण पराधीन है

चिरविदा की ये घड़ी
है मुझे बुला रही
तुम मिलोगे अब जहाँ
मैं वहीं चला चलूँ

धरोहर सी यहाँ साँसे

बरसता ही रहा कल
रात भर सावन
किसी की याद में डूबा
छलछलाये जा रहा हो मन

ये कैसा मोह है उनसे
भुलाये भी नहीं भूले
ये कैसा दर्द है जिसमें
हृदय एकान्त में रो ले

क्यों पुरवइया लिपटकर
एक सूनी डाल से रो ले
तरसता ही रहा कल
रात भर ये मन

तुम्हारे पास आने को
नहीं रहता कोई संयम
बरसता ही रहा कल
रात भर सावन

फटा कागज है ये जीवन
धरोहर ही यहाँ साँसे
विवशता की गली में लग
रही हैं अनगिनत हाटें

मेरा आँचल तो है खाली
खरीदूँ क्या यहाँ आकर
अरे! मैं अजनबी हूँ कौन
खुश होगा मुझे पाकर

तरसता ही रहा अपनी
अकिंचनता से आजीवन
बरसता ही रहा कल
रात भर सावन

सिकता प्राणो के

जाने से फिर से तुम्हारे
मौसम दहल सा गया है
फूलों ने बिसरा महकना
सावन सहम सा गया है

सासों मे उतरी दोपहरी
प्राणों मे सिकता समाये
छूटी है फिर मन की गगरी
पलकों ने बादल बसाये

सपनों ने सच से कहीं की
दिल खोलकर दिल की बातें
मंजिल ने राहों से कह दी
हमराज की चन्द बातें

क्यो हर मिलन के नसीबों
लिखवा मुसल्सल बिछुड़ना
क्यों जिन्दगी की तपिश को
पड़ता है हरदम सुलगाना

माना कि हर दिन का सूरज
आते ही सझा के ढलता
आया है जो भी धरा पर
जाना भी उसको है पड़ता

लेते ही लेते थके हम
देने की बारी न आई
हम चाहते थे, उसे तो
अपनी कभी सुध न आई

तुमसे बिछुड़कर हमें क्यों
सूना हरेक पल लगा है
टीसों ने दिल का चहकना
खामोश क्यों कर दिया है

सिंकंता शर्मा के

प्रतिबद्धता

दिशाएँ पूछती हैं क्या पता तेरा
हवाएँ पूछती हैं क्या निशाँ तेरा
तुझे बस याद कर रोता है सावन
यह धरती तप रही तुझ बिन अगन वन

खिजाँ बेचैन है कितनी तेरे बिन
हुई मजबूर रातें दहकते दिन
क्या ये मुमकिन नहीं तू लौट आये
मना लेंगे तुझे जो मान जाये

ये बढ़ती उम्र साँसों का ये मेला
बिना तेरे सफर कितना अकेला
बिना तेरे उदासी का ये आलम
बिना तेरे जिए तो क्या जिए हम

ये मुमकिन है वो दिन इक रोज आए
तेरे बिन साँस का क्रम टूट जाए
मेरे सपने तुम्हारे पास होंगे
मेरी आस्था तुम्हारे साथ होगी

जनम इक और लेंगे इस धरा पर
तुम्हें इक बार तो पाकर रहेंगे
बदल लेंगे लकीरें हम नियति की
तभी सपने हमारे पूर्ण होंगे

रोशनी ने अन्धकार ही चुना

थक चला हूँ मैं तुम्हें पुकार कर
रुक गया प्रभंजनों से हार कर
राह को न मंजिलों की अब खबर
ढा रहे हैं आशियाँ हो कहर

जाने किसकी बाट जोहते हुए
वक्त लौट लौट कर ठहर गया
वो सुबह के आगमन में देर थी
सब्र का चिराग फिर भी बुझ गया

आंसुओं की ये फसल तड़प रही
किस कदर उदास फिर ये शाम है
मौन के अधर पे सिसकियाँ रहीं
छाँव के नसीब सिर्फ घाम है

बिन दिशा ही ये पवन भटक रहा
मंजिलों बिना ही कारवाँ चला
साँस की ये नाव साहिलों बिना
रोशनी ने अन्धकार ही चुना

है हताश ख्वाब के कफन यहाँ
प्यार कुछ नहीं फकत सितम यहाँ
जाल है फरेब के सुलभ यहाँ
पतझरों को राजदाँ मिले कहाँ

बुझ चला हूँ प्यास के अँगार बन
है वजह रश्क का, है आँच कम
कल की आज का गिला है, प्यार कम
क्या कहूँ है कब से अपनी आँख नम

मन आँगन

हरियाली बिछी बिछी
सावन पहुना रे
भीगी बौछार लिये
बदरा फिर आ रे

भू–अम्बर एक हुए
मिलन राग बजाते
तरुणायी के नयनों
सपने फिर सजते

घूँघट की ओट
लिए रसवन्ती जैसे
बिन बोले नयनों के
सैन चले ऐसे

अंग अंग मादकता
बिखरी है जल थल
प्रकृति नटी पावस में
झूम रही पल पल

इतना मन [illegible]
इतना रस कौन [illegible]
पी लेने को [illegible]
अपना जब जहाँ मिले

[illegible] पुरवइया फिर
डार डार इठलाए
मन आगन फिर बरसे
बदरा ये रतनारे

श्याम रंग

आँगने फुहार छींट [illegible]
पल[illegible] [illegible]
मेघ [illegible]
प्राण [illegible]

[illegible] कहीं अमराबी
[illegible] कुहू कैसे खींची
पावस की पुरवायी
तन-गागर पटक रही

घूँघरो मे नूपुर के
नृत्य-बोल ठमक रहे
निर्मोही की सुध फिर आई

सिसकारी मारे है
फिर से क्या वँसवारी
पियू कहाँ पियू कहाँ
पपिहा फिर दुखियारी

पेगो" मे कजरी के
नेह गीत बरस रहे
अल्हड़ता ने ली अँगड़ायी

अलको से बन्री ने
श्याम रंग चुरा लिए
यादों की फिर बरात आई
आँगने फुहार लौट आई

सपना जो साथ नहीं

१०८४५

जाने क्यों मेरे ही आँगन मे
लौट लौट आती है ये बैरिन पुरवइया

सतरंगी सपनों की ओट लिए
छुमक रही रंगों की दुलहनिया
नयनों से ढलक रहा आम लिए
हुलस रही प्राणों की कोयलिया

जाने क्यों बार बार पावस मे
छलक छलक आती है नयनो की गागरिया

कोई था अपना जो पास नहीं
कैसा था सपना जो साथ नहीं
यों कहने को कुछ भी बात नहीं
यह कैसा दिन जिसकी रात नहीं

जाने क्यों हर आहट के संग संग
ठहर ठहर आती है पैरों की पायलिया

[illegible] नीर

पुरवइया सन-सनन सनन-[illegible]
सावन करता है [illegible]
झरता नीर [illegible]
रस से परे हुए [illegible]

[illegible] सागर प्रमुदित मन
[illegible] फिर नन्दन
नाचे [illegible] का सरगम
[illegible] का पंचम

दादुर, झींगुर [illegible]
महक उठे फिर से [illegible]
मन संस्कृति को [illegible]
भू पर उतरे [illegible]

[illegible] के टूटे [illegible]
[illegible] कण-कण
[illegible] के आलिंगन
[illegible] से [illegible]

निश्छल निर्मल [illegible]
ज्यों शिशु को [illegible]
भू पर नभ के [illegible]
विरहिन की श्वासा [illegible]

उठे तट-बन्धों पर पुन

खाली सेजवा

घुमड़ रहे नभ में [illegible] कारे
बैरी सावन पी [illegible] पुकारे
अगनी जियरा की [illegible]
मन मोरा रह रह के [illegible] अकुलाये

बिन सजना सूनी है ये रैना
खाली सेजवा बनी विष की बैना
घुमड़े [illegible] क्यों कजरी के नारे
बैरी [illegible] पी बिन काहे आयो दुवारे

कैसे कजरा लगाऊँ मैं [illegible]
कासे कह दूँ मैं [illegible] बतियाँ
कैसे होके सुहागन [illegible]
कब से आई न पी [illegible]

धधके फिर से [illegible] यादों के साये
बैरी सावन पी [illegible] काहे आयो दुवारे

रास्ता है मेरा अजाना

देश है ये बेगाना ऽ ऽ
हूँ मैं सभी से अजाना

कौन है जो मुझे
राह में रोक कर
कुछ तो अपनी कहे
कुछ हमारी सुने

गन्ध भी है यहाँ
हैं बहारें यहाँ
बीच मजधार भी
हैं किनारे यहाँ

भीड़ भी है यहाँ
हाट भी है यहाँ
अजनबी हैं बहुत
सिर्फ अपना नहीं
कोई अपना नहीं

सिर्फ अपने लिए
जो जिए, क्या जिए
फूल एकान्त में
जो खिले, क्या खिले

वो अभागे थे जो
मेघ बरसे नहीं
व्यर्थ हैं वे नयन
जोकि छलके नहीं

राह में जो अकेला
ही चलता रहा
क्या नहीं खुद की
अर्थी वो ढोता रहा

बिन सुने सांस की
दास्ताँ, चुक गई
बिन जले दीप की
आस्था बुझ गई

बिन पढ़े ज़िन्दगी के
वरक चुक गए
रात आने के पहले ही
दिन चुक गये

[illegible] कहाँ
[illegible] बड़ा
संग मेरे मगर फिर
भी, कुछ तो नहीं
हाय! कुछ भी नहीं

है कहाँ मुझको जाना ऽऽ
रस्ता है मेरा अनजाना
है वो साथी कहाँ
साथ जो चल सके

कुछ हमारी सुने
कुछ वो अपनी कहे

देश है ये बेगाना ऽ ऽ

बहता रहा मैं

तन मेरा प्यासा
मन मेरा प्यासा
मेरी अंखें [illegible]
चलता रहा हूँ [illegible]
मेरी न कोई निशानी

मैंने तट का देखा सपना
तट ने मुझे ना पुकारा
बहता रहा मैं लहरों के धारे
मुझको मिला ना किनारा

मुझको गुमाँ था साथी मिलेगा
मैंने सभी से निभाया
तनहा मुझे छोड़कर चल दिये सब
सपने कहा मैं बेचारा

सूरज न देता अब तो संदेसा
चंदा न लोरी सुनाये
दस्तक तो दी थी कोई न बोले
अब मो गया मैं दुवारे

[illegible] हुए देव माने न मुझसे
[illegible] गयी पूजा अधूरी
[illegible] अमावस्या भी अब मुझसे रूठी
[illegible] मिटे इतनी दूरी

सच को मिले थे सपने सजीले
सपनो से भेंटी जुन्हाई
रजनी अमावस के बस हो चली है
कैसे खिले अब जुन्हायी

[illegible] समझ कर हम जब भी पहुँचे
[illegible] ने मुझको डुबोया
[illegible] की डोरी में बँध कर चले जब
[illegible] ने मुझको रुलाया

पारदर्शी

न जाने किसने लिख दिया
मेरे नसीब में सफर
मिला सुकून न सिला
मिला न मुझको हमसफर

समझ रहे थे हम जिसे
वो छाँव, सिर्फ धूप थी
जिसे सुवास कह रहे
कफन में लिपटी धूल थी

न जाने किसने कह दिया
कि ख्वाब ही है जिन्दगी
लुटी जहाँ पे आस्था
समझ रहे हैं बन्दगी

खुद अपनी कब्रगाह पर
जला रहे थे हम दिये
हम अपने इन्तकाल पर
रचा किये थे मरसिये

न जाने किसने कह दिया
न रात के लिए सहर
न हमने फिर किया गिला
पिया किया सदा जहर

रूठे हुए देव माने न मुझसे
रह गयी पूजा अधूरी
ठगिनी उमरिया भी अब मुझसे रूठी
कैसे मिटे इतनी दूरी

सच को मिले थे सपने सजीले
सपनो से भेंटी जुदाई
रजनी अमावस के वश हो चली है
कैसे खिले अब जुन्हाई

साहिल समझ कर हम जब भी पहुँचे
साहिल ने मुझको डुबोया
कसमों की डोरी में बँध कर चले जब
अपनों ने मुझको रुलाया

टूटे तट-बन्धों पर पुन

पारदर्शी

न जाने किसने लिख दिया
मेरे नसीब मे सफर
मिला सुकून ना सिला
मिला न मुझको हमसफर

समझ रहे थे हम जिसे
वो छाँव, सिर्फ धूप थी
जिसे सुवास कह रहे
कफन मे लिपटी धूल थी

न जाने किसने कह दिया
कि ख्वाब ही है जिन्दगी
लुटी जहाँ पे आस्था
समझ रहे हैं बन्दगी

खुद अपनी कब्रगाह पर
जला रहे थे हम दिये
हम अपने इन्तकाल पर
रचा किये थे मरसिये

न जाने किसने कह दिया
न रात के लिए सहर
न हमने फिर किया गिला
पिया किया सदा जहर

[illegible]

यह [illegible] [illegible] है यहाँ
यह [illegible] [illegible] [illegible] रही
जहाँ [illegible] [illegible] [illegible]
वहाँ [illegible] [illegible] [illegible] जिन्दगी

खुले खुले गगन तले
[illegible] पंख तोलते
हैं [illegible] नीड के सपन
[illegible] के जो हो लिए

भटक रहे हैं हर कदम
ठहर [illegible] है हर डगर
चला [illegible] [illegible] सफर
[illegible] [illegible] [illegible] के [illegible]

[illegible] हो रहा अतीत को
[illegible] [illegible] आग मे
[illegible] लगी कोई सुबह
[illegible] [illegible] अंधकार मे

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
कहो [illegible] रहे कहे
जो मौत से [illegible] [illegible]

मौत बार बार

स्वप्न के सफर खत्म हुए नहीं
प्रश्न बन खड़ी रही है ज़िन्दगी
दास्तान सुन सका कोई नहीं
शूल बन गई हरेक बन्दगी

सर्प-दंश बनती है चाँदनी
बाँसुरी उदास हुई है रागिनी
प्यास रात की सदा रुकत बनी
दस्तकों के पास अब कोई नहीं

शब्द ढूँढते हरेक ओर हैं
अर्थ ढूँढते हरेक शब्द हैं
हर असत्य दर्पणों में बस गया
आहटों से हर विगत सहम गया

दीप सिर्फ रात के लिए रही
मौत बार बार के लिए रही
पुष्प अब मजार के लिए रही
क्या हुआ जो दिल की बात अनकही

याद तुम्हारी

जब कोई बौराई पुरवइया
दिशा भटक जाती है
सावन की कोई बादरिया
जब घुमड़ बरस जाती है

तन की ज्वाला ऐसे में क्यों
मन को डस डस जाती है
जाने क्यों सब मुझको बरबस
फिर याद तुम्हारी आती है

धरती को बाहो में भरने
जब जब नभ धरती पर उतरा
जब प्राणो को पावन करने
सावन बूँदे बनकर बिखरा

जब कोई राधा बिन
मोहन, अँसुआती है
जब मरु की याद किसी
सावन को आती है

टूटे तट-बन्धों पर पुन

स्मृतियों की पाती देने
प्राणों का हरकारा पहुँचा
कुहरा ओढ़े जब पछुवा ने
अलसाया सूनापन बख्शा

जब अनहोनी होनी
बनकर रुक जाती है
जाने क्यों तब मुझको बरबस
फिर याद तुम्हारी आती है

नयन की कोर

जब कभी प्रभात की
सप्त किरन बावरी
ढूंढती हुई तुम्हें
द्वार मेरे आ गई

मैं गगन की ओट से
मैं क्षितिज की छोर से
मैं नयन की कोर से
पुकारता चला गया

मैं तुम्हारी याद का
दुलारता चला गया

जब कभी मल्हार की
झूमती हुई कली
गीत की फुहार ले
प्राण में समा गई

मैं तुम्हारी राह को
मैं तुम्हारी चाह को
मैं तुम्हारे प्यार को
सराहता चला गया

मैं तुम्हारी आरती
उतारता चला गया

जब कभी बयार सी
एक महकती नहीं
राह खोजती हुई
पास से गुजर गई

स्नेह नीड़ मैं कहीं
एक रात रह सकूँ
हर पड़ाव हर डगर
निहारता चला गया

मैं तुम्हारी चाह में
गुहारता चला गया

तुम्हारी गन्ध

कि जब भी दिन ढला यहाँ
उदास शाम आई है
न जाने क्यों बहुत बहुत
तुम्हारी याद आई है

किसी के जागते नयन
औ रात का ये सिसकना
कहीं पे भोर के सपन
औ दीप का ये सुलगना

कि जब भी साँस को मेरी
तुम्हारी गन्ध आई है
न जाने क्यों बहुत बहुत
तुम्हारी याद आई है

ये वादियों में उठ रहे
अतीत के बुझे धुँए
ये रात भर बरस रहे
पलक किसी के अधमुँदे

छूटे तट–बन्धों पर पुन

कि जब किसी की बात में
तुम्हारी बात आई है
न जाने क्यों बहुत बहुत
तुम्हारी याद आई है

विद्रोह के कगार पर
किसने की है ये बेबसी
क्यों 'अ स' के सवाल पर
नियति खड़ी है हँस रही

कि जब भी प्यास की कथा
किसी ने भी सुनाई है
न जाने क्यों बहुत बहुत
तुम्हारी याद आई है

सूनी प्रतीक्षा

तुम अब भी आना
इनसे ज़रा मिलने आना

सूना सा आंगन
खाली सी डूंगरी
रूठे से साजन
रीती सी गगरी

तुमको मिलेगी
डूबी सी सांझ
इतना बिना कहे
सूनी प्रतीक्षा

तुमको नहीं है न आँसू बहाना
तुम अब भी आना

कब से खड़ी पर
सूना है द्वार
सपनों से [illegible]
सिसकता है प्यार

वैभव है आगत
झूठा अनागत
कैसे करे कोई
खुद का ही स्वागत

टूटा बसेरा
उजड़ी सी डाली
झोली को लेकर
आया था माली

क्यों सावन के बिन ही
रिमझिम हो सखा
आँखियाँ बिन ज्यों
बरसा है गगा

सुर के बिना ही एक जब भी गाना
तुम जब भी आना

कुछ तो लिखा शेष होगे
तुम्हारी याद में कुछ तो कहेंगे
इन आँसुओं की कहानी
कोई सुनेगा, मन की बातें
दूर से कभी तो जानो

तुमको कसम है हौले से सुनना
तुम जब भी आना

उम्र की फसल कटी

प्यास को सवारने
दर्द को निखारने
फूल फिर सिसक रहा
फटकों के सामने

फिर बहार खिल सके
गन्ध फिर महक सके
इसलिए गुजर गये
पतझरों के काफले

चाँदनी का दीप ले
रात बाट जोहती
आँसुओं के ओस से
फिर नई सुबह हुई

उम्र की फसल कटी
साँस आज थक गई
लालिमा के आँगने
फिर से साँझ ढल गई

स्वप्न को सराहने
प्यार को दुलारने
प्राण फिर पिघल रहा
नियति के उलाहने

सार्थक संदिग्धता

सदेह के नाग तुमने
इतने जतन से है पाले
जन्मों के ये फासले भी
सशय ने ही हे सँभाले

मारे जहर ही जहर को
दस्तूर है यह खुदा का
है बिन दर्की दोस्ती भी
जैसे महल खण्डहरों का

जो गन्ध भी दे सके ना
बेसूद ऐसी बहारें
जो दर्द भी सह सके ना
बेमर्ज ऐसी फुहारें

रिश्तों की खाँई बढ़ाते
हम जा रहे अब भी आगे
गाँठो के नगमे है गाते
तोडे हमी ने थे धागे

लम्हों के जो साल तुमने
रंजिश सँजो कर सँभाले
कड़वाहटो ने उन्हें ही
दामन मे अपने है पाले

आभ्यन्तर ग्रन्थि

जो दहक रही नहीं है आग वो
राख हो चुकी कहो है आग वो
प्यास प्यास है तभी बुझे नहीं
सेज मीत बिन भला सजे कहीं

बेबसी न बाँटने से बट सका
शर्त साथ प्यार के न चल सकी
मुफलिसी मिटी अगर खुदी मिली
ठोकरों की चौखटें हमें मिली

आसमाँ तरस रहे जमीन को
औ पवन दिशा बिना भटक रही
शब्द अर्थ के बिना तरस रहे
मेह रेत मे ही क्यों बरस रहे

मन्दिरों मे अजगरों का वास है
हर यकीन के लिए तो श्राप है
बेरुखा हुए वफाओं के सिले
मान के बिना भी मौत हो मिले

मुख्तलिफ निगाह राह मुख्तलिफ
फिर भी हम समझ रहे कि साथ है
जो दरख्त छाँव दे सके नहीं
हम उन्हे समझ रहे सुलभ है

टूटे पट-बन्धों पर पुन

प्रसंग च्युत

जो मेरे पास है नहीं
वो मेरा कई भी नहीं
हमे हुआ है अब यकी
है कोई मुन्तजिर नहीं

हरेक साँस ऊब की
बनी हुई है दास्ताँ
गये नजर बचा के सब
किसे समझ ले मेहरबाँ

डराने हमको है लगे
ये साये खुद के [illegible] के
था राह कहाँ बढ़ेंगे
जो काफिले रुके रहे

बहारें जो रहीं नहीं
वो हमको याद क्यों रही
खिज़ाएँ कितनी दिल कशी
जा अश्क के गले लगी

अगर कोई मेरा नहीं
तो एक आसमाँ अभी
है जिन्दगी की आजि[illegible]
न वक्त अब रहा [illegible]

मीत बिन

कौन कहता है जीवन है सपना
कोई भी तो यहाँ है न अपना
मंज़िलें राह को छल रही हैं
छाँव के हैं नसीबों में तपना

हर नयन है यहाँ छलछलाये
मीत बिन प्राण हैं सूने सूने
हर पवन बिन दिशा है भटकती
हर अगन साँस संग है सुलगाती

आस के हैं नसीबों निराशा
क्या था बोया औ क्या हमने काटा
साँस के कर्ज अब भी हैं बाकी
मीत शायद इसी से न आता

भ्रम हुए जा रहे मोह सारे
फीके लगते हैं उत्साह सारे
हर नगर है उदासी भरी क्यों
हर सहर इतनी गमगीन है क्यों

खो गया जो उसे हम विसुरते
पास जो, दूर हम उससे रहते
सच तो यह हम न खुद को समझते
फैसले फिर भी हम सबके करते

ह्रास ओढ़े पराजय

क्या कहूँ बात फिर भी अधूरी यहाँ
हैं निकट फिर भी कितनी है दूरी यहाँ
मिल के बिछुड़े सभी हँस के रोये सभी
सेज काँटों की हम फिर भी सोये यहाँ

जो हकीकत थी वह हम बिसर ही चले
इक अधूरी कहानी थे दुहरा रहे
बेसबर दर्द से जख्म रिसते रहे
एक धुंधली निशानी थे सहला रहे

क्या करें ह्रास ओढ़े पराजय यहाँ
हर कसम झूठ की करती धाढ़े यहाँ
दिल के हाथों सभी हैं विवश आज भी
हम कफन से लिपट करके रोये यहाँ

अँधेरे पुकारे

मौसम के प्रहरी अनेरे
बीते हुए कल को हेरे
फागुन के गीतों में खोये
जैसे प्रणय के हो फेरे

अथ को न सीमा सुहाये
कटिबन्ध लगाए न भाये
कल की दुल्हन यहाँ पर
इतिहास को फिर से लाँघे

झीनी हुई है दिशाएँ
मन क्यों थका सा झुकाये
दर्पन यशाये गहरे
कजरी कसैली खुशी

गहरी हुई फेर उदास क्यों
बढ़ते हुए वर्षों के साये
रग रग में क्या जिन्दगी के
दसों के जुगनू समाये

छूटे तट-पन्थों पर पुन

लुटती यहाँ बहारें
घुटती है सपनों की साँसें
हम सिर्फ ढोते रहे हैं
गुजरे हुए कल की यादें

कंधे कहाँ तक सँभालें
जहरीले सपनों के बोझे
मायूसियों के दुधारे
हमको अँधेरे पुकारे

धूप से क्या मिला

थक गया हूँ मगर
मैं नहीं रुक सका
कब से चलता रहा
सिर्फ चलता रहा

कंटकों का डगर
धूप से क्या मिला
राह में जो मिला
प्यार से मैं मिला

ढूँढ कर ये नयन
झेल मन की जलन
ले दुआ को दवा
क्यों बिसारे सपन

जो बना था हुआ
जो लिखा था मिला
रोशनी जब न दे
तो अँधेरा भला

दिन तपा हो तभी
साँझ आती यहाँ
तन थका हो तभी
नींद आती यहाँ

दो घड़ी का मिलन
आओ हँस बोल ले
कौन जाने कभी
फिर मिले ना मिले

रह सके जो अँधेरे
सदा याद में
आओ ऐसे अँधेरों
से मिलकर चले

मनुहार

बहुत [illegible] [illegible] आज
तुम अपने प[illegible] [illegible]ुला लो
आँचल के साथ [illegible] अपने
मुझको [illegible] बुला लो

सहे न जाते मौसम मुझसे
दश रही है यह पुरवायी
मधुरों को प्यासी चितवन
दुख रही है आज जुन्हायी

भीगे कोरो का आवाहन
बाट देखता है यह सावन
ममता के बन्धन में अपने
मुझको आज बंधा लो

घिर घिर आता है जब मेरे
मन का सूनापन आगन मे
बरस बरस जाते तब कितने
सावन भादों मेरे मन मे

सूने दिन लम्बी है राते
कहने को है कितनी बाते
आज धधकते अरमानों को
अपने हृदय लगा लो

फागुन के दिन

माँगे बिन मिले यहाँ
कभी घृणा कभी प्यार
माँगे से मिला नहीं
कभी कफन को मजार

कोई माने अपना
बेगाना क्यों दूजा
हाय ! कहीं निष्फल है
प्राणों की भी पूजा

कहीं धूप छाँव ढले
कहीं राह गाँव रुके
जनम जनम दुल्हनिया
साजन की बाट तके

हार किये बैठी है
फूलों का सा शृंगार
राह कहीं मंजिल से
हो जाती जार जार

सावन बिन मिले यहाँ
कैसे रस की फुहार
फागुन के दिन होते
जीवन में सिर्फ चार

दिशा बिना

हरेक शब्द अर्थ बिन
अनाथ बन के रह गया
हरेक शरीर प्राण बिन
चिता से आ गले लगा

चिराग जल के बुझ गये
निशान बन के मिट गये
क्यों आज के ललाट पर
निशान कल के रह गये

दिशा बिना भटक रहे
पखेरू प्राण के यहाँ
न पेड़ है न डाल है
टिके कहाँ ये आशियाँ

न वह सफर न वो समाँ
न वह जमीं न वह फिज़ाँ
न मंज़िलों का है पता
कहाँ चला ये कारवाँ

सिसक रहा न जाने क्यों
हरेक दिन का हर पहर
सुलग उठा है फिर कहीं
ये सर्द रात का कफस

छूटे तट-बन्धों पर पुन